शुक्लयजुर्वेद के द्रष्टा

– महर्षि याज्ञवल्क्य

''प्रत्यग्र वेदेन गिरा मलं यो विधूय योगेनच चित्तजातम् ज्ञानेन तत्त्वं तदलक्ष्यमाप तं याज्ञवल्क्यं प्रणोऽस्मि नित्य ।''

शुक्लयजुर्वेद माध्यन्दिन वाजसनेय शाख के प्रवक्ता महर्षि याज्ञवल्क्य थे । उनका जन्म मिथिला में हुआ था । उनके पूर्वज अन्नदान करने के लिए प्रसिध्द थे । अन्न का प्राचीन प्रचलित नाम ''वाज'' था अत: उनके वंश की प्रख्याति ''वाजसने नाम से थी । महर्षि याज्ञवल्क्य के पिता का नाम महर्षि देवरात था । श्रीमद्भागवत में कहा गया है कि :– ''देवरातसुत: सोऽपि द्वर्दित्वा यजुषांङ्गम् ।।'' इनकी माता का नाम माहेश्वरी देवी ऐसी लोक मान्यता है जब कि उनकी माता का एक नाम विमलादेवी भी था ऐसी प्रसिध्दि है इनके माता–पिता का स्वर्गवास बचपन में ही हो गया था अत: इनका पालन–पोषण इनके मामा महर्षि वैशम्पायन द्वारा किया गया । ये बचपन से ही तेजस्वी स्वभाव से चंचल तथा स्वाभिमानी किन्तु अध्ययन मे मेधावी थे ।

इनका जन्मस्थान मिथिला के मधुबनी जिला के बेनीपट्टी अनुमंडल के जगइत(जगवत) नामक गाँव में हुआ । जैसा कि याज्ञवल्क्य स्मृति के आचाराध्याय के बाईसवें श्लोक में बताया गया है कि :–

''मिथिलास्थ:स योगीन्द्र: क्षणं ध्यात्वाऽब्रवीन्मुनीन वर्णाश्रमेतराणां नो ब्रूहि धर्मानिशेषत:।।''

मिथिला के माहात्म्य का वर्णन करते हुए रुद्रयामलातन्त्र में भी कहा गया है कि :–

''याज्ञवल्क्याश्रमे सौम्ये । भग्नं तिष्ठति तद् धनु: । तत्र स्नात्वा तदभ्यर्च्य पापराशीन प्रणाशयेत ।।''

इस ग्रन्थ के अठाईसवें श्लोक से तैतीसवें श्लोक के अवलोकन से पता चलता है कि महर्षि याज्ञवल्क्य का आश्रम जनकपुर के पाँच कोस के अन्दर धनुखा नामक स्थान पर था । जहॉ पर रामचन्द्र द्वार भग्न किये गये शिवधनुष का टुकड़ा आज भी विद्यमान है ।

महर्षि याज्ञवल्क्य की दो पत्नियाँ थी – मैत्रेयी और भरद्वाजकन्या कात्यायनी । इनमें मैत्रेयी संतानहीन थी किन्तु ब्रह्मज्ञानी थी । कात्यायानी के चन्द्रकान्त, महामेध और विजय नामक तीन पुत्र हुए । बृहदारण्यक उपनिषद के पंचम अध्याय के प्रथम ब्राम्हण में कहा गया है :–

'' अथ ह याज्ञवल्क्यस्य द्वे भार्ये बभूवतु मैत्रेयी च तयो हि मैत्रेयी ब्रह्मवादिनी बभूव स्त्री प्रज्ञैव त र्हि कात्यान्याथाह याज्ञवल्क्योऽन्यदवृत्तमुपाकरिष्यन् । (अ.५ब्रा.–१)

याज्ञवल्क्य की शिष्य परम्परा में द्वापर में पुत्रत्व प्राप्त कात्यायन नामक ऋषि हुए जिन्होंने श्रौताग्निकर्म साधन पध्दति दर्शक सूत्र, कल्पसूत्र तथा अठारह परिशिष्ट सूत्रों की रचना की जिसके आधारपर वाजसनेयिशाखा के यज्ञ व श्रौत कर्म संचालित होते है ।

याज्ञवल्क्य वैशम्पायन ऋषि के भगिनेय थे । उन्होंने याज्ञवल्क्य को स्नेहपूर्वक यजुर्वेद का

अध्ययन करवाया । किन्तु गुरु वैशम्पायन के क्रोध के कारण उन्हें उक्त यजुर्वेद के ज्ञान से वंचित होना पडा । तत्पश्चात याज्ञवल्क्य ने भगवान सूर्य की आराधना करके वह यजुष् प्राप्त किया जो उनके गुरु वैशम्पायन के पास भी नहीं था । पुन: सरस्वती को प्रसन्न करके शतपथ ब्राम्हण व चारों वेदों का संपूर्ण ज्ञान याज्ञवल्क्य ने प्राप्त किया । महर्षि याज्ञवल्क्य द्वारा निर्मित पाँच प्रमुख ग्रन्थ उपलब्ध हैं यथा १. याज्ञवल्क्य शिक्षा २. प्रतिज्ञासूत्र ३. याज्ञवल्क्यस्मृति ४. शतपथब्राम्हण तथा ५. शुक्लयजुर्वेद संहिता । याज्ञवल्क्य के विद्वत की ख्याति सुनकर गुरु वैशम्पायन को भी आश्चर्य हुआ । इसके बाद उन्होंने अपने शिष्यों को याज्ञवल्क्य हे पास पढ़ने को भेजा जिसका वर्णन महाभारत के शान्तिपर्व में मिलता हैं :–

''तत: शातपथं कृत्स्नं सरहस्यं ससंग्रहम । चक्रे सपरिशेषेण हर्षेण परमेण ह ।। कृत्वा चाध्ययनं तेषां शिष्याणां शतमुत्तमम् । विप्रियार्थं सशिष्यस्य मातुलस्य महात्मन: ।।

कदाचित राजा जनक ने यज्ञ किया जिसमें होता अध्वर्यु उद्गाता तथा ब्रह्मा क्रमश पैल वैशम्पायन, जैमिनी और सुमन्तु थे । इस यज्ञ को देखने कात्यांयन के साथ याज्ञवल्क्य भी गये जहाँ उन्होंने अपने मामा वैशम्पायन द्वारा किये जा रहे अध्वर्यु कर्म विषयक प्रायश्चित न किये जाने के कारण यज्ञ को फल रहित बताया तब वैशम्पायन और जनक द्वारा कहे जाने पर शुक्लयजुर्वेद में कथित प्रायश्चित्त के द्वारा उन्होंने यज्ञ को सफल बनाया । यज्ञसमाप्ति के बाद जनक ने कर्मसाद्गुण्य संपादन दक्षिणा वैशम्पायन को दिया किन्तु याज्ञवल्क्य के विरोध के पश्चात देवल ऋषि ने यज्ञ की आधी दक्षिणा याज्ञवल्क्य को दिलवायी । सामवेदधुरंधर धनंजय ने अपने यज्ञ में याज्ञवल्क्य को अपना पुरोहित बनाया । एक बार राजा जनक ने मुक्ति प्राप्ति के निमित्त गंगा के तट पर अश्वमेध यज्ञ किया और महर्षि याज्ञवल्क्य को उसका आचार्य बनाया । पुन:राजा जनक ने यक्ष्मारोग से मुक्ति के निमित्त गोदावरी के तट पर चन्द्रपुष्करिणी में आदित्य देवता का याग याज्ञवल्क्य के आचार्यत्व में कर यक्ष्मा रोग से मुक्ति प्राप्त की । पुन: नर्मदा के तट पर सूर्य पुष्करिणी के जल के निकट मित्रविन्द नामक नगर में सूर्य ग्रहण में कात्यायन श्रौतसूत्र में कथित विधी से देवयाग किया गया । याज्ञवल्क्य ने परीक्षित के पुत्र शतानीक को यजुर्वेद पढ़ाया । एक बार श्री कांचीमें विष्णु की प्रसन्नता के लिए चतुंर्मुख ब्रह्माश्वमेध महर्षि याज्ञवल्क्य के आचार्यत्व में सम्पादित किया गया ।

राजा जनक ने संकल्प किया कि किसी ब्रह्मनिष्ठ का अन्वेषण करके उससे ब्रह्मविद्या का उपदेश लें ऐसा निश्चय करके उन्होंने यज्ञ के बहाने याज्ञवल्क्य सहित सभी महर्षियों को आमंत्रित किया । सबके आने के बाद उन्होंने वत्ससहित मृत हजार गायें जिनके सींग सोने के बने थे – लाकर चुनौती दी कि जो ब्रह्मनिष्ठ हो वह इन गायों को जीवित करके ले जाये । यह बात सुनकर सभी ऋषियों के मन में हुआ कि यदि मैं पहले उठूँगा तो मेरे ब्रह्मनिष्ठता प्रदर्शन से अन्य ऋषियों का अपमान होगा ऐसा सोचकर कोई भी पहले नही उठें । तब याज्ञवल्क्य ने प्रोक्तकारि नामक अपने शिष्य को बुलाया जो गुरु का आदेश पाकर गायें ले गया । तब ऋषियों के बीच कोलाहल मच गया । तब याज्ञवल्क्य का गार्गी

तथा अन्य ऋषियों के साथ शास्त्रार्थ हुआ । सभी ऋषियों को संतुष्ट कर शिष्यों को उन्होंने आदेश दिया कि तुम बोलो– ''ब्रह्मनिष्ठ होने के कारण याज्ञवल्क्य गायों को लेकर अवश्य जायेंगे । इतना कहते ही सभी गायें योगीश्वर के प्रभाव से सजीव हो गयी जिन्हें लेकर प्रोक्ताकारि गुरु के आश्रम धनुषा चला गया । तत्पश्चाद् याज्ञवल्क्य ने जनक को ब्रह्मविद्या का उपदेश किया । राजा जनक के राज्य में याज्ञवल्क्य की उपस्थिति का वर्णन महाभारत के शान्तिपर्व में दिखाई देता है यथा – ''स एवमनुशास्तस्तु याज्ञवल्क्येन धीमता । प्रीतिमानभवद्राजा मिथिलाऽधिपतिस्तदा ।। गते मुनिवरे तस्मिन् कृते चापि प्रदक्षिणा । दैवशान्तिर्नरपतिरासीनस्तत्र मोक्षवित ।। इति ।।

राजा जनकके दरबार में याज्ञवल्क्य का गार्गी तथा अन्य ऋषियों के साथ वार्तालाप हुआ जिसमें याज्ञवल्क्य ने सबको पराजित कर दिया । इसका वर्णन बृहदारण्यकोपनिषद में विस्तृत रुप से द्रष्टव्य है । इनसे ब्रह्मोपदेश पाकर जनक राज्य त्यागकर वन चले गये जहाँ देहातीत ज्ञान पाकर वे ''विदेह'' प्रसिध्द हो गए । इस प्रकार सर्वजयी महर्षि याज्ञवल्क्य द्वारा प्रतिपादित सिध्दान्त इस प्रकार हैं :–

पूर्णमद: पूर्णमिदं पूर्णात पूर्णमुदच्यते । पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते ।।

ॐ खम्ब्रह्म खम्पुराणम् वायुरखंमिति ह स्माह कौरव्वायणी पुत्रो वेदोऽयं ब्राह्मणा विदुर्वेद नैव यद्वेत्तव्यम् ।।४।।

मुक्तिकोपनिषद में वाजसनेयी यजुर्वेद की पन्द्रह शाखायें बतायी गयी हैं यथा – जाबाल बौधेय काण्व माध्यन्दिनीय स्थापनीय कपाला पौण्ड्रवत्स, आवटिक, परमावटिक, पाराशर, वैणेय वैधेय, वैनतेय, वैजपा इत्यादि । कुद्दलोग गालव व कात्यायन सहित शुक्लयजुर्वेद की सत्रह शाखायें बताते हैं ।

निष्कर्षत: हम कह सकते है कि महर्षि याज्ञवल्क्य द्वारा प्रवर्तित शुक्लयजुर्वेद का प्रचार–प्रसार मिथिलामें दिखाई देता है । इसी कारण मिथिला में सूर्यराधाना की परंपरा सूर्यषष्ठी इत्यादी व्रतों में भी दिखायी देती है । इस प्रकार महर्षि याज्ञवल्क्य की जन्मभूमि तथा कर्मभूमि दोनों ही मिथिला ही है । इति ।

डॉ. धीरेन्द्र झा
संस्कृत शिक्षण प्रमुख
भारती शिक्षा समिति
विन्ध्यवासिनी पथ, कदमकुआँ,
पटना – ८००००३ (बिहार)
मो. ०९९३९४६७८६०